

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 11-02-2016

● अंक-431 ● तारीख - 12 फरवरी 2016, माघ शुक्ल पक्ष - 04 ● शुक्रवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया

● पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)



पर्वत की चोटियों पर बारिश होती है और पानी सब तरफ से नीचे की ओर बहता है, उससे किसी नदी का निर्माण नहीं होता, लेकिन जब पानी एक दिशा में बहता है तो पहले नाले का निर्माण होता है, फिर धारा बनती है। उसके बाद एक तेज धार के साथ नदी का निर्माण होता है, जो अंत में जाकर समुद्र में मिल जाती है। इसी प्रकार हमारे मन और विचार हमेशा पवित्र विचारों की ओर बहते रहना चाहिए। आपके हाथ हमेशा अच्छे कर्मों में लगे रहने चाहिए।

नीति के श्लोक

ईर्ष्या घृणी न संतुष्टः क्रोधो नित्याशङ्कितः।
परभाग्योपजीवी च षडेते नित्यदुःखिताः॥
अर्थ:- ईर्ष्या करने वाला, घृणा करने वाला, असंतोषी, क्रोधी, सदा संकित रहने वाला और दूसरों के भाग्य पर जीवन-निर्वाह करने वाला - ये छः सदा दुखी रहते हैं।

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति
प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च
दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च॥

अर्थ:- बुद्धि, कुलीनता, इन्द्रियनिग्रह, शास्त्रज्ञान, पराक्रम, अधिक न बोलना, शक्ति के अनुसार दान और कृतज्ञता - ये आठ गन पुरुष की ख्याति बढ़ा देते हैं।

कला किसे कहते हैं?

वस्तु में या कार्य में मनोमोहकता (आकर्षण) उत्पन्न करने का नाम कला है, इसकी तीन श्रेणियाँ हैं- उत्तम, मध्यम और जघन्य, मनोमोहकता के साथ जहाँ उपयोगिता भी बढ़ जाय, वहाँ कला उत्तम है, जहाँ उपयोगिता न बढ़े, केवल मनोमोहकता बढ़े, वहाँ कला मध्यम है, जहाँ मनोमोहकता तो बढ़े, किन्तु उपयोगिता घट जाय या नष्ट हो जाय, वहाँ कला जघन्य है, जैसे-भोजन स्वादिष्ट और सुन्दर बनने के साथ यदि स्वास्थ्यवर्धक भी हो तो उत्तम, स्वास्थ्यवर्धक भले ही न हो, किन्तु स्वास्थ्य-नाशक न हो तो मध्यम और यदि वह स्वास्थ्यनाशक हो तो जघन्य।

- स्वामी सत्य भक्त जी

मनोबल बढ़ाएँ

- व्यवहारकुशल बनें और हमेशा नम्रता व मुस्कराहट के साथ व्यवहार करें। इससे न केवल आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा बल्कि इससे आपके अच्छे मित्रों की संख्या भी बढ़ेगी। अच्छे मित्र हमेशा मदद करने के लिए तैयार रहते हैं और आपके सुख दुःख में हमेशा आपके साथ होते हैं।
- मोटिवेशनल सेमिनार में हिस्सा लें, ऐसे टेलीविजन प्रोग्राम या वीडियो देखें जो आपको इंस्पायर और मोटिवेट करें, स्वयं सुधार और स्वयं का विकास की किताबें एवं प्रेरणादायक लेख पढ़ें। ऐसे प्रेरणादायक लेख एवं किताबें हमारे उपदक को रिचार्ज कर देती हैं।
- वर्तमान में जियें (लाइव इन प्रसेन्ट) क्योंकि न तो भूतकाल एवं न ही भविष्यकाल पर हमारा नियंत्रण है।
- सकारात्मक सोचें, अच्छे मित्र बनायें, बच्चों से दोस्ती करें और आत्मचिंतन करें।
- (ध्यान), योग एवं प्राणायाम करें। अपने लिए समय निकालें और कुछ समय एकांत में बिताएं। स्वयं से बात करें और यह महसूस करें कि आप एक बेहतर इन्सान हैं।



उदयपुर के अनिकेत का सुझाव देश में सबसे श्रेष्ठ



उदयपुर में सीटीआई कॉलेज से मैकेनिकल इंजीनियरिंग और आईआईएम-रायपुर से एमबीए करने के बाद अनिकेत जम्मू-कश्मीर में प्रधानमंत्री ग्रामीण विकास कार्यक्रम में फेलो के रूप में कार्यरत हैं। उनकी जीत को लेकर यहां उनके पिता एमके चौधरी, माता वंदना चौधरी को ढेरों बधाइयां मिलीं। इसमें देश की एकता-अखंडता के लिए जनता से सुझाव मांगे गए थे। अनिकेत ने बताया कि प्रधानमंत्री से मिलना उनके लिए गर्व की बात होगी।

ये दिए थे सुझाव

- बच्चों में संस्कृति के प्रति गर्व की भावना पैदा करें। एक राज्य की संस्कृति

व विशेषताओं की जानकारी अन्य राज्यों के विद्यार्थियों को हो। जानकारी का स्तर बढ़ाया जाए। बच्चों के बीच सांस्कृतिक, ज्ञान, कहानी आदि प्रतियोगिताएं हों।

2. सांस्कृतिक मिलन व समारोह हों। लिटरेरी फेस्टिवल, फूड फेस्टिवल आयोजित किए जाएं। सांस्कृतिक व्यापार को बढ़ावा मिले।

3. सांस्कृतिक विभिन्नताओं व समानताओं को आपस में बांटें। प्रदर्शनी, थीम विलेजेज, डॉक्यूमेंट्रीज, फोटोग्राफी आदि के माध्यम से बेहतर प्रदर्शन हो।

4. अंतरराज्यीय यात्राओं को बढ़ावा दिया जाए। ग्रामीण सांस्कृतिक पर्यटन केंद्रों को बढ़ावा जाए। मेजबानी संस्कृति में नए विचारों व कार्यों का समावेश किया जाए। गाइडेड टूर व फ्री रोमिंग हो।

5. निरंतर जनभागीदारी हो और स्थानीय लोगों की भागीदारी को बढ़ावा मिले।

गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों का महत्व

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

तत्त्वज्ञानियों ने गायत्री मंत्र में अनेकानेक तथ्यों को

दूढ़ निकाला है और यह समझने-समझाने का प्रयत्न किया है कि गायत्री मंत्र के 24 अक्षर में किन रहस्यों का समावेश है। उनके शोध निष्कर्षों में से कुछ इस प्रकार हैं-

(1) ब्रह्म-विज्ञान के 24 महाग्रंथ हैं। 4 वेद, 4 उपवेद, 4 ब्राह्मण, 6 दर्शन, 6 वेदाङ्ग। यह सब मिलाकर 24 होते हैं। तत्त्वज्ञों का ऐसा मत है कि गायत्री के 24 अक्षरों की व्याख्या के लिए उनका विस्तृत रहस्य समझाने के लिए इन शास्त्रों का निर्माण हुआ है।

(2) हृदय को जीव का और ब्रह्मरंध्र को ईश्वर का स्थान माना गया है। हृदय से ब्रह्मरंध्र की दूरी 24 अंगुल है। इस दूरी को पार करने के लिए 24 कदम उठाने पड़ते हैं। 24 सदगुण

अपनाने पड़ते हैं- इन्हीं को 24 योग कहा गया है।

(3) विराट् ब्रह्म का शरीर 24 अवयवों वाला है। मनुष्य शरीर के भी प्रधान अंग 24 ही हैं।

(4) सूक्ष्म शरीर की शक्ति प्रवाहिकी नाडियों में 24 प्रधान हैं। ग्रीवा में 7, पीठ में 12, कमर में 5 इन सबको मेरुदण्ड के सुषुम्ना परिवार का अंग माना गया है।

(5) गायत्री को अष्टसिद्धि और नवनिद्धियों की अधिष्ठात्री माना गया है। इन दोनों के समन्वय से शुभ गतियाँ प्राप्त होती हैं। यह 24 महान् लाभ गायत्री परिवार के अन्तर्गत आते हैं।

(6) सांख्य दर्शन के अनुसार यह सारा सृष्टिक्रम 24 तत्त्वों के सहारे चलता है। उनका प्रतिनिधित्व गायत्री के 24 अक्षर करते हैं।



पृथ्वी और मनुष्य का संबंध

अक्षीय गति के एक चक्र पर वापस जाएं तो 25,920 को 60 (जो एक स्वस्थ व्यक्ति की प्रति मिनट हृदय गति भी है) से भाग करने पर 432 आता है। चार सौ बत्तीस संख्या बहुत सी संस्कृतियों में अहम है - प्राचीन यहूदी संस्कृति, मिश्र की संस्कृति, मेसोपोटामिया की संस्कृति और भारतीय संस्कृति में भी। 432 क्यों? अगर आपकी सेहत और अवस्था अच्छी है, तो आपका हृदय प्रति मिनट 60 बार धड़कता है, जिसका मतलब है, एक घंटे में 3600 बार। इसे 24 से गुना करने पर एक दिन में आपका दिल 86,400 बार धड़कता है। 864 को 2 से भाग करने पर, फिर से 432 आता है।

जब आप समय की सवारी करते हैं, उसका लाभ उठाते हैं, तो आप एक असाधारण जीवन जी सकते हैं, इंसान और इंसानी दिमाग को असाधारण जीवन के लिए ही तैयार किया गया है। अगर आप स्वस्थ हैं, तो आप प्रति मिनट लगभग 15 बार सांस लेते हैं। अगर आपने खूब साधना की है, तो यह संख्या 12 हो सकती है। प्रति मिनट 15 सांस का मतलब है, 900 सांस प्रति घंटा और 21,600 प्रति दिन। एक प्राचीन भारतीय खगोलग्रंथ, सूर्य सिद्धांत के अनुसार, सूर्य की रोशनी 0.5 निमिष में 2,202 योजन की दूरी तय करती है। एक योजन नौ मील के बराबर होता है। 216 को 2 से गुना करने पर फिर से 432 आता है। अगर आप पृथ्वी का घेरा लें - तो एक इकाई होती है - समुद्री मील- असल अर्थ में मील यही है क्योंकि यह पृथ्वी पर असर डालती है। माप की दूसरी इकाइयां गणना की आसानी के लिए बनाई गई थीं।

एक वृत्त में 360 डिग्री होते हैं। इसी तरह, पृथ्वी के ऊपर 360 डिग्री हैं और हर डिग्री को 60 मिनट में बांटा गया है। इनमें से एक मिनट एक समुद्री मील के बराबर है। इसका मतलब है कि विषुवत रेखा पर पृथ्वी का घेरा 21,600 समुद्री मील है, इतनी ही सांसें आप दिन भर में लेते हैं। इसका मतलब है कि पृथ्वी समय पर घूम रही है और आप सही सलामत हैं।

अगर पृथ्वी समय पर नहीं घूमती, तो यह हम सब के लिए अच्छा नहीं होता।

समय कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसका हमने आविष्कार किया है - समय की जड़ें प्रणाली से, हमारी रचना से गहराई से जुड़ी हैं। महाभारत काल में, 'युग' की काफी चर्चा की गई है और यह भी बताया गया है कि उसकी गणना कैसे करते हैं और वे कैसे काम करते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप एक अलग संदर्भ में मानव जीवन पर समय के प्रभाव को देखें। यह कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे किसी ने सोच कर बनाया है। यह एक अद्भुत और गहन विज्ञान है। योग का हमेशा से इसके साथ गहरा नाता रहा है। बस हम इसके सिद्धांतों की व्याख्या में यकीन नहीं रखते। हम इसके अभ्यास से शरीर को सृष्टि के समय और स्थान के अनुकूल बनाने की कोशिश करते हैं, क्योंकि उनके अनुकूल हुए बिना आप ज्यादा दूर तक नहीं जा पाएंगे। अगर आप समय पर सवार नहीं हैं, तो आप एक औसत जीवन, शायद एक दुखदायी जीवन जिएंगे। जब आप समय की सवारी करते हैं, उसका लाभ उठाते हैं, तो आप एक असाधारण जीवन जी सकते हैं।



अनुरोध

प्रिय पाठकगण, "मन के जीते जीत सदा" समाचार पत्र को दिये गए अपार सहयोग हेतु आपका आभार। हमारा प्रयास सदैव पाठकों को तथ्यपूर्ण एवं रुचिकर सामग्री उपलब्ध कराने का रहा है। इसी क्रम में, यदि आप हमें पठनीय सामग्री संबंधी कोई सुझाव देना चाहें, अपनी स्वरचित कहानी/कविता भेजना चाहें अथवा आपके गाँव/शहर/राज्य से जुड़ी कोई ऐतिहासिक/धार्मिक/सांस्कृतिक जानकारी समाचार पत्र में प्रकाशित करवाना चाहें तो संपूर्ण जानकारी फोटो सहित हमें डाक से भेजें या ईमेल करें। अपूर्ण, तथ्यहीन जानकारी प्रकाशित नहीं की जाएगी तथा सामग्री प्रकाशित करने अथवा न करने का अधिकार प्रकाशक मण्डल के अधीन है। धन्यवाद।

पता :- ई-डी-71, बप्पा रावल नगर, सेक्टर - 6 हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)
ई-मेल :- mankijeet2015@gmail.com

मैं कोन हूँ?



संत विरजानंद अपनी कुटिया में बैठे थे। द्वार खटखटाने की आवाज हुई। विरजानंद जी ने पूछा - "कौन है बाहर?" उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला। दूसरी-तीसरी बार पूछने पर भी जब कोई उत्तर नहीं मिला तो

विरजानंद जी सहारा लेकर बाहर निकलें। उन्हें पता चला कि बाहर मूलशंकर खड़े हैं। उन्होंने उनसे पूछा - "क्यों रे! पूछने पर बोला क्यों नहीं था तू?" मूलशंकर ने उत्तर दिया - "जब यह पता ही नहीं मैं कौन हूँ तो क्या उत्तर देता?" संत विरजानंद प्यार से उनकी पीठ थपथपाकर बोले - "आ जा बेटा! कब से तेरा ही इंतजार कर रहा था।" दिव्य दृष्टिसंपन्न गुरु और प्रखर प्रतिभासंपन्न शिष्य का मिलन हुआ। यही मूलशंकर आगे चलकर स्वामी दयानंद के नाम से प्रख्यात हुए।

मानव मन के बोल

मानव की करुणा



एक बार जब मैं भीलवाड़ा में एक दिन दुकान पर बैठा था। पड़ोस से धीरे से एक आवाज सुनी। भाई साहब बच्चा बहुत भूखा है। इसे दूध पिलाओ। बहुत दुःखी है, रो रहा है। जैसे ही मेरे पास आये, मैंने देखा 5-6 महीने का बच्चा गोद में खून की कमी से एक दम पतला दुबला और एक भिखारी व्यक्ति ने गोद में ले रखा है। मैंने कहा बैठिए। दूध मंगवाया, बच्चे को दूध पिलाया। उनको भोजन करवाया। उनके चेहरे पर कुछ चमक आई। मैंने सोचा इनमें भी परमात्मा है। सब का मालिक एक। सभी एक समान, तो उनके कंधे पर मैला कुचला एक बैग था। उन्होंने मेरे सामने निकाल रख दिया। मैं तो चकित हो गया। राष्ट्रपति का प्रमाणपत्र, इनको शब्दवेदी बाण की विद्या आती है। इन्होंने मेरे सामने प्रदर्शित किया। मैं बड़ा अभिभूत हूँ। ये बहुत तरक्की करें। जो किसी जमाने में हमने कथा पढ़ी थी। महमूद गौरी ने दुष्टता की, 17 बार हारा पृथ्वीराज जी से और 18 वीं बार वह जीता तो पृथ्वीराज जी को कैद कर लिया और उनकी आँखें फोड़ दी। उनके नेत्र की ज्योति छीन ली। लेकिन जब मैंने उनके प्रमाण पत्र देखे, प्रधानमंत्री जी का भी था, मुख्यमंत्री जी का भी था, राज्यपाल जी का भी था। मेरे आँखों में आँसू आ गये। मैंने कहा - "आपकी ये दशा? इतने महान व्यक्ति है आप। आप इतने महान व्यक्ति और इतने दुःखी। रोते हुए बोले कैलाश जी, इस बच्चे को जन्म देके इसकी मां चल बसी। मैं मेरी पत्नी से बहुत प्रेम करता था - मैं। अधीर हो गया। सहन नहीं कर पाया। मैं बीमार पड़ गया। कुछ देव योग ऐसा हुआ कि मेरी जमीन इधर उधर हो गई।

क्रमशः अगले अंक में ...

सम्पादकीय

समय अपनी गति से निरन्तर चल रहा है या यह कहें कि वह तेज गति से भाग रहा है। निरन्तर गतिमान इस समय के साथ कदम मिलाकर चलने पर ही मानव जीवन की सार्थकता है। इसके साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चलने वाला व्यक्ति पिछड़ जाता है। पिछड़ना सफलता से दूर हटना है, उसकी ओर गतिशील होना नहीं।

जीवन में वही मनुष्य सफल है, जो समय के साथ चलता है। कुछ लोग तो ऐसे दूरदर्शी होते हैं, जो अपने आने वाले समय को पहले ही भाँप लेते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी योजना पहले ही बना लेते हैं तथा प्रत्येक कसौटी पर सफल होते हैं। मनुष्य को समय के साथ आगे बढ़ते हुए अपना काम पूरा करते रहना चाहिए। कल के भरोसे काम को छोड़ना समस्याओं को आमंत्रित करना है। जिस व्यक्ति ने समय की उपयोगिता को समझ लिया है, वह सफलता को अवश्य हासिल करता है।

प्रत्येक मनुष्य को अपनी दिनचर्या की समय सारिणी अथवा तालिका को बनाकर उसका पूरी दृढ़ता से पालन करना चाहिए। जिस व्यक्ति ने अपने समय का सही उपयोग करना सीख लिया, उसके लिए कोई कार्य असंभव नहीं है। कुछ लोगों को अकर्मण्य रहकर निठल्ले समय बिताना अच्छा लगता है। वे अकर्मण्यता और आलस्य को समय की कमी के बहाने छिपाते हैं।

समय को जिन्दगी के समान माना गया है, कहते हैं कि अगर आप समय को बर्बाद कर रहे हैं तो जिन्दगी को बर्बाद कर रहे हैं, अगर आप समय का अच्छा प्रयोग कर रहे हैं तो अपनी जिन्दगी को अच्छा बना रहे हैं।

समय को भगवान की बनाई हुई इस सृष्टि में सबसे बलवान माना गया है, जब ये बदलता है तो इंसान को राजा से रंक और रंक से राजा बना सकता है। व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जिनसे उसके भाग्य का बनना और बिगड़ना तय होता है। अगर व्यक्ति ने समय की सही दिशा या गति को समझ लिया, तब तो वह सफल हो गया, अन्यथा उसके हाथ केवल असफलता ही लगेगी।

प्रकृति में प्रत्येक वस्तु का समय निश्चित है। यदि प्रकृति भी आलसी और अकर्मण्य लोगों की भांति कार्य करना बन्द कर दे तो सम्पूर्ण सृष्टि का समय चक्र बदल जाएगा तथा प्रकृति विनाश की ओर आरुढ़ हो जाएगी। यदि विद्यार्थी केवल परीक्षा के समय परिश्रम करेगा और शेष दिन आराम करेगा तो उसे वांछित सफलता नहीं मिल सकती। अतः हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का सबसे बड़ा नियामक घटक समय ही है।



गंगोत्री धाम

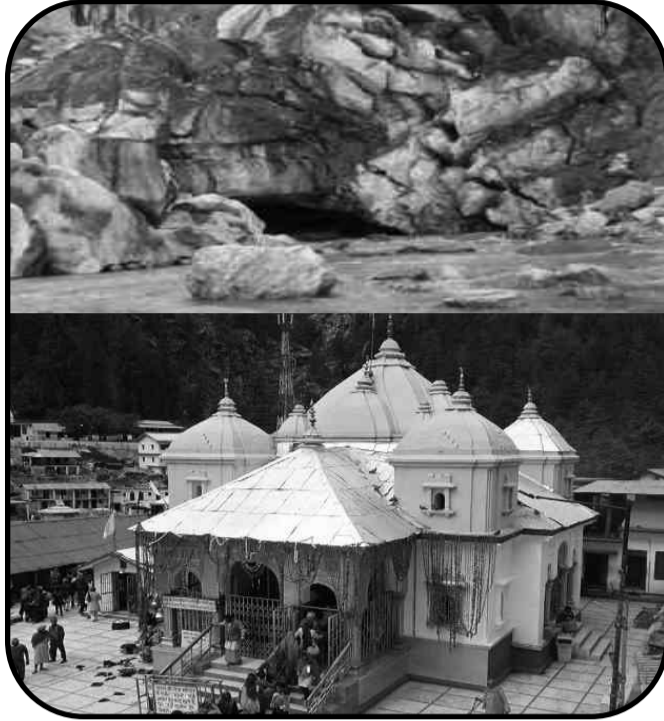
गंगोत्री पौराणिक काल से ही एक धार्मिक स्थल के रूप में प्रसिद्ध रही है। प्राचीन समय से ही अनेक ऋषी-मुनि और साधु इस दुर्गम क्षेत्र के पावन धाम से आकर्षित रहे हैं और तथा दूर-दूर से गंगोत्री में आकर साधना एवं तपस्या द्वारा मोक्ष पाने की चाह रखते हैं। गंगोत्री गंगा नदी का उद्गम स्थल माना जाता है। इस पावन धाम के कपाट अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर खोले जाते हैं और दीपावली के दिन मंदिर के कपाट बंद कर दिए जाते हैं। गंगोत्री एक धार्मिक स्थल है। यहां पहुँचने वाले तीर्थयात्री विभिन्न प्रकार के धार्मिक कर्म कांड संपूर्ण करते हैं। यहां मौजूद पंडित एवं पुरोहित तीर्थयात्रियों एवं भक्तजनों के विभिन्न धार्मिक कार्य और कर्मकांडों में सहायता करते हैं। यह तीर्थयात्रियों के परिवारों का इतिहास रखने के अलावा वंश के इतिहास को स्मृतियों में रखने की एक प्राचीन रीति भी पूर्ण करते हैं।

गाय के बारे में हैरान कर देने वाले तथ्य

- गाय का दूध अमृत के समान है इसलिए जिन नवजात बच्चों की मां दूध नहीं पिला पाती है, उन्हें गाय का दूध पिलाया जाता है।
- गाय का दूध, मूत्र, गोबर के अलावा दूध से निकला घी, दही, छाछ, मक्खन सभी पौष्टिक होता है।
- गाय को मां तुल्य कहा जाता है। इसी कारण इतिहास के ऐसे बहुत सारे राजा हैं, जिन्होंने अपने कार्यकाल में गौ-वध पर पाबंदी लगाकर हिंदुओं का दिल जीता था।
- पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह ने अपने शासनकाल के दौरान राज्य में गौहत्या पर मृत्युदंड का कानून बनाया था।
- भारत में गाय की 30 नस्लें पाई जाती हैं जो रेड सिन्धी, साहिवाल, गिर, देवनी, थारपारकर आदि नस्लें दुधारु गायों की प्रमुख नस्लें हैं।
- गोमूत्र (गाय का मूत्र) पंचगव्यों में से एक है। कुछ आधुनिक शोधों में इसके अत्यन्त गुणकारी औषधीय गुण बताये जा हैं।
- गाय के दूध में 7 एमीनोएसिड के प्रोटीन को पाया जाता है, जिससे हड्डियों का रोग नहीं होता है।
- हाल ही में हुए शोध में यह बात सामने आई है कि भारतीय गाय के दूध में मिलने वाले प्रोटीन से हृदय घात, डायबिटीज और मानसिक रोग को ठीक करने में अहम होता है।
- नई रिसर्च में यह बात भी सामने आई है कि भारतीय नस्ल की गाय में सन ग्लैंडस होती है जो उसके दूध को पौष्टिकता के साथ औषधि में बदल देती है।

सिलाई प्रशिक्षण का समापन

उदयपुर। 'नारायण सेवा संस्थान' में निःशक्त व निर्धनजन के लिए चलाए जा रहे व्यवसायोन्मुखी विभिन्न प्रशिक्षणों के अन्तर्गत गत दिनों द्वैमासिक 'निःशुल्क' सिलाई प्रशिक्षण का समापन संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल व निदेशक वंदना अग्रवाल ने सभी 25 प्रशिक्षणार्थियों को प्रारंभिक रोजगार के लिए सिलाई मशीनें व वस्त्र प्रदान किए। प्रशिक्षिका नसरीन बानू ने प्रशिक्षण प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। संचालन परियोजना प्रभारी यशोदा पणिया ने किया।



तनोट माता का मंदिर



तनोट माता का मंदिर जैसलमेर में करीब 130 किलोमीटर दूर भारत-पाकिस्तान बॉर्डर के निकट स्थित है। यह मंदिर लगभग 1200 साल पुराना है। वैसे तो यह मंदिर सदैव ही आस्था का केंद्र रहा है, पर 1965 की भारत-पाकिस्तान की लड़ाई के बाद यह मंदिर देश-विदेश में अपने चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध हो गया है। 1965 की लड़ाई में पाकिस्तानी सेना की तरफ से गिराए गए करीब 3000 बम भी इस मंदिर पर खरोंच तक नहीं ला सके। यहाँ तक की मंदिर परिसर में गिरे 450 बम तो फटे तक नहीं। ये बम अब मंदिर परिसर में बने एक संग्रहालय में भक्तों के दर्शन के लिए रखे गए हैं। 1965 की लड़ाई के बाद इस मंदिर का जिम्मा सीमा सुरक्षा बल ने ले लिया और यहाँ अपनी एक चौकी भी बना ली। इतना ही नहीं, एक बार फिर 4 दिसंबर 1971 की रात को पंजाब रेजिमेंट और सीमा सुरक्षा बल की एक कंपनी ने लोंगेवाला में पाकिस्तान की पूरी टैंक रेजिमेंट को धूल चटा दी थी और लोंगेवाला को पाकिस्तानी टैंकों का कब्रिस्तान बना दिया था। लोंगेवाला भी तनोट माता के पास है। लोंगेवाला की विजय के बाद मंदिर परिसर में एक विजय स्तम्भ का निर्माण किया गया, जहाँ अब हर वर्ष 16 दिसंबर को सैनिकों की याद में उत्सव मनाया जाता है। जैसलमेर भले ही रेगिस्तानी इलाका हो, लेकिन रेगिस्तान की रेत गर्मियों की दोपहरी में जितनी गरम हो सकती है, सर्दियों की रातों में यह उतनी ही ठंडी हो जाती है। इसीलिए रेगिस्तान में चूरु देश के मैदानी इलाकों में सबसे ठंडी जगहों में से एक माना जाता है। इसीलिए जब जैसलमेर जाएँ, तो मौसम के हिसाब से पहनने-ओढ़ने की भी पर्याप्त तैयारी करके जाएँ।

श्री तिरुपति

यदि आप अपनी छुट्टी को धार्मिक यात्रा में बदलना चाहते हैं तो तिरुपति सबसे उत्तम स्थान है। तिरुपति आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में है और चैन्नई से 152 किमी. दूर है। हिंदुओं में तिरुपति पूजा के आठ सबसे महत्वपूर्ण स्थानों में से एक माना जाता है। तिरुपति में कमल पर खड़े भगवान विष्णु (तिरुपति बालाजी) की 2 मी. उंची प्रतिमा है। प्रतिमा के आस पास भूदेवी और श्रीदेवी है।



भगोरियां-मध्यप्रदेश का लोक नृत्य

विलक्षण लय वाले दशहरा और डांडरियां नृत्य के माध्यम से मध्यप्रदेश की बैगा आदिवासी जनजाति की सांस्कृतिक पहचान होती है। बैगा के पारंपरिक लोक गीतों और नृत्य के साथ दशहरा त्योहार की उल्लासभरी शुरुआत होती है। दशहरा त्योहार के अवसर पर बैगा समुदाय के विवाहयोग्य पुरुष एक गांव से दूसरे गांव जाते हैं, जहां दूसरे गांव की युवा लड़कियां अपने गायन और डांडरियां नृत्य के साथ उनका परंपरागत तरीके से स्वागत करती है। यह एक दिलचस्प रिवाज है, जिससे बैगा लड़की अपनी पसंद के युवा पुरुष का चयन कर उससे शादी की अनुमति देती है। इसमें शामिल गीत और नृत्य, इस रिवाज द्वारा प्रेरित होते हैं। माहौल खिल उठता है और सारी परेशानियों से दूर, अपने ही ताल में बह जाता है।



मुन्व्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'

मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल अध्यक्ष प्रबन्धक-मोहन लाल गाडनी संपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी संपादन सल्योगी-घनश्याम त्रिठ नठौड

पेट के लिए वरदान है पपीता

- पपीता को गुणों की खान कहा गया है। यह आपको पेट का भी खयाल रखता है और त्वचा की खूबसूरती का भी। यह कई बीमारियों से दूर रखता है और इसका स्वाद भी बेजोड़ है। पपीता के फायदों के बारे में बता रही हैं निधि भटनागर -
- आप मोटे हैं या पाचनत्रं में गड़बड़ी है? आंतें कमजोर हैं या भूख नहीं लगती? एक अदद पपीता आपके ऐसे दर्जनों सवाल का जवाब है। जी हां, अपनी खानपान में पपीता को जगह दीजिए और फिर देखिए इसका कमाल। यह पेट का खयाल तो रखेगा ही, आपके चेहरे पर चमक लाकर आपको खूबसूरत भी बनाएगा। इसमें मौजूद विटामिन ए, बी, डी, प्रोटीन, कैल्शियम, लौह आदि इसे सेहत का खजाना बना देते हैं।
- पपीते को पेट के लिए तो वरदान माना गया है। इसमें पेप्सिन नामक तत्व पाया जाता है, जो भोजन को पचाने में मदद करता है। पपीता का सेवन रोज करने से पाचन शक्ति में वृद्धि होती है। पका पपीता पाचन शक्ति को बढ़ाता है, भूख को बढ़ाता है, मोटापे को नियंत्रित करता है और अगर आपको खट्टी डकारें आती हैं तो पपीते का रस उसे भी बंद कर देगा। पके या कच्चे पपीते की सब्जी बना कर खाना पेट के लिए लाभकारी होता है।
- पपीते का रस अरुचि, अनिद्रा, सिरदर्द, कब्ज व आंव-दस्त आदि रोगों को ठीक करता है। आपको भूख नहीं लगती या पेशाब ठीक से नहीं होता तो सुबह में नियमित रूप से पके पपीते का सेवन करें। इससे भूख भी लगने लगेगी और पेशाब से संबंधित समस्या भी दूर हो जाएगी। पपीते के रस के सेवन से खट्टी डकारें बंद हो जाती है। यह हृदय रोग, आंतों की कमजोरी आदि को भी दूर करता है।





सादर आमंत्रण

अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायतार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा सत्संग समिति-सियावास, बेगमगंज

दिनांक 20 से 26 फरवरी 2016

समय : प्रातः 11.00 से दोप. 03.00 बजे तक

स्थान : बालक उ. मा. विद्यालय परिसर बैगमगंज, जिला-रायसेन (म.प्र.)

कथा व्यास : पं. श्री मनमोहन दूबे जी महाराज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान कराएंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र : 09753475713, 9009611562

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

पूजा पं. श्री मनमोहन जी दूबे महाराज (मधुगौं गाँव)

प्रशान्त अग्रवाल अनर्नादिय अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कैलाश "मानव" मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक नारायण सेवा संस्थान

जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान

कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान

प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान

वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान

देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी... कृपया सपरिवार अवश्य पधारें।